पाठ - साखियाँ एवं सबद

शब्दार्थ

साखियाँ

1. **सुभर** - अच्छी तरह से भरा हुआ, लबालब
2. **केलि** - क्रीड़ा, खेल
3. **मुकताफल** - मोती
4. **दुलीचा** - आसन, कालीन
5. **स्वान** - कुत्ता
6. **झक मारना** - समय नष्ट करना
7. **पखापखी** - पक्ष-विपक्ष
8. **कारनै** - कारण, वजह
9. **सुजान** - चतुर, मनुष्य, सज्जन
10. **निकटि** - निकट, नजदीक, करीब
11. **काबा** - मुस्लिम समुदाय का पवित्र तीर्थस्थल
12. **मोट** - मोटा आटा
13. **जनमिया** - जन्म लेना
14. **सुरा** - शराब, मदिरा

सबद

1. **टाटी** - बाँस का बना हुआ पर्दानुमा पट्टी
2. **थूँनी** - स्तम्भ, खम्भा, टेक
3. **बलिंडा** - मजबूत मोटी-लम्बी लकड़ी
4. **छाँनि** - छप्पर
5. **भाँडा फूटा** - भेद खुला, राज खुलना
6. **निरचू** - थोड़ा भी, जरा सा
7. **चुवै** - चूता है (पानी आदि निकलना)
8. **बूठा** - बरसा, बरसात के पानी का गिरना
9. **खीनाँ** - क्षीण हुआ, बिखरना

egyanarchive

व्याख्या -

(1) **मानसरोवर सुभर जल, हंसा केलि कराहिं |**
मुकताफल मुकता चुगैं, अब उड़ि अनत न जाहिं |

भावार्थ - उक्त पंक्तियाँ कवि कबीर की 'साखियाँ' से उद्धृत हैं | कवि इन पंक्तियों के माध्यम से यह कहना चाहते हैं कि जिस प्रकार हंस मानसरोवर के भरे हुए जल में क्रीड़ा करते हुए मोती चुगते हैं तथा उसे छोड़कर कहीं जाना पसंद नहीं करते | ठीक उसी प्रकार मनुष्य भी जीवन के मायाजाल अर्थात् धोखे के जाल में ऐसा फंस गया है कि उसमें सत्य को पहचानने की शक्ति ही न रही |

(2) प्रेमी ढूँढ़त मैं फिरौं, प्रेमी मिले न कोइ |
प्रेमी कौं प्रेमी मिलै, सब विष अमृत होइ |

भावार्थ - उक्त पंक्तियाँ कवि कबीर की 'साखियाँ' से उद्धृत हैं | कवि इन पंक्तियों के माध्यम से यह कहना चाहते हैं कि प्रेमी रूपी ईश्वर को ढूंढ़ना बहुत कठिन है | कवि ईश्वर को हर जगह तलाशते हैं, परन्तु सफलता हाथ नहीं लगी | कवि का मानना है कि जब प्रेमी रूपी ईश्वर हमें मिल जाएगा, तब कष्ट रूपी सारा विष, सुख रूपी अमृत में बदल जाएगा |

(3) हस्ती चढ़िए ज्ञान कौ, सहज दुलीचा डारि |
स्वान रूप संसार है, भूँकन दे झख मारि |

भावार्थ - उक्त पंक्तियाँ कवि कबीर की 'साखियाँ' से उद्धृत हैं | कवि इन पंक्तियों के माध्यम से यह कहना चाहते हैं कि साधना रूपी एक आसन बिछाकर मनुष्य को सदा अपने ज्ञान को हाथी के समान बड़ा और विशालकाय बनाने का प्रयत्न करना चाहिए अर्थात् ज्ञान अर्जन पर अपना ध्यान केंद्रित करना चाहिए |
कवि संसार की तुलना कुत्तों से करते हुए कहते हैं कि ये तुम पर भौंकते ही रहेंगे अर्थात् तुम्हारी निंदा करते ही रहेंगे | अत: इन पर ध्यान देना मूर्खता है | वे एकदिन स्वयं चुप हो जाएँगे |

(4) पखापखी के कारनै, सब जग रहा भुलान |
निरपख होइ के हरि भजै, सोई संत सुजान |

भावार्थ - उक्त पंक्तियाँ कवि कबीर की 'साखियाँ' से उद्धृत हैं | कवि इन पंक्तियों के माध्यम से यह कहना चाहते हैं कि सही मानो में सच्चा मनुष्य या संत वही है, जो बिना किसी भेदभाव के अर्थात् निष्पक्ष रूप से ईश्वर की भक्ति-भजन में लीन है |

egyanarchive

वरना, लोग ईश्वर को भूलाकर पक्ष-विपक्ष की भूमिका निभाते हुए आपस में लड़ रहे हैं | ईर्ष्या की भावना चरमोत्कर्ष पर पहुँच गई है |

(5) हिन्दू मूआ राम कहि, मुसलमान खुदाई |
कहै कबीर सो जीवता, दुहुँ के निकटि न जाइ |

भावार्थ - उक्त पंक्तियाँ कवि कबीर की 'साखियाँ' से उद्धृत हैं | कवि इन पंक्तियों के माध्यम से यह कहना चाहते हैं कि हिन्दू राम नाम का जाप करते हैं और मुसलमान खुदा का नाम लेते हैं अर्थात् ये दोनों एक-दूसरे से भेदभाव रखते हैं | जबकि कवि के अनुसार, वास्तव में जीवित वही व्यक्ति है, जो इन दोनों तरह के व्यक्तियों से खुद को पृथक रखे |

(6) काबा फिरि कासी भया, रामहिं भया रहीम |
मोट चून मैदा भया, बैठि कबीरा जीम |

भावार्थ - उक्त पंक्तियाँ कवि कबीर की 'साखियाँ' से उद्धृत हैं | कवि इन पंक्तियों के माध्यम से यह कहना चाहते हैं कि तुम चाहे काबा जाओ या फिर काशी जाओ | तुम राम की उपासना करो या फिर रहीम की | ईश्वर तो एक ही है | जिस तरह मोटे आटे को महीन पीसने से मैदा बन जाता है, पर दोनों एक ही वस्तु है | ठीक उसी प्रकार ईश्वर को चाहे जिस किसी भी रूप में मानो, वह तो एक ही है |

(7) ऊँचे कुल का जनमिया, जे करनी ऊँच न होइ |
सुबरन कलस सुरा भरा, साधू निंदा सोई |

egyanarchive

भावार्थ - उक्त पंक्तियाँ कवि कबीर की 'साखियाँ' से उद्धृत हैं | कवि इन पंक्तियों के माध्यम से यह कहना चाहते हैं कि सिर्फ ऊँचे कुल में जन्म लेने से कुछ नहीं होता | मनुष्य अपने कुल से नहीं, बल्कि अपने कर्मों की वजह से जाना जाता है | यदि मनुष्य का कर्म बुरा है, तो वह बुरा ही कहलाएगा | जिस प्रकार सोने के कलश में यदि शराब पड़ा हो, तो वह निंदा के योग्य ही है |

व्याख्या - सबद

(1) मोकों कहाँ ढूँढ़े बंदे, मैं तो तेरे पास में |
ना मैं देवल ना मैं मसजिद, ना काबे कैलास में |
ना तो कौने क्रिया-कर्म में, नहीं योग बैराग में |
खोजी होय तो तुरतै मिलिहौं, पल भर की तलास में |

कहैं कबीर सुनो भई साधो, सब स्वाँसों की स्वाँस में ||

व्याख्या - उक्त पंक्तियाँ कवि कबीर के 'सबद' से उद्धृत हैं | कवि इन पंक्तियों के माध्यम से यह कहना चाहते हैं कि हम ईश्वर की तलाश में भटकते रहते हैं | कभी मंदिर में, कभी मस्जिद में, कभी काबा में, तो कभी कैलाश में उसे ढूँढ़ते रहते हैं | जबकि कवि के अनुसार, ईश्वर तो हमारी साँसों में विद्यमान है | यदि सच्ची आस्था से उसे ढूँढ़ोगे तो पल भर की तलाश में ईश्वर को पा सकते हो | क्योंकि ईश्वर कण-कण में व्याप्त है |

(2) **संतों भाई आई ग्याँन की आँधी रे |**
भ्रम की टाटी सबै उड़ाँनी, माया रहै न बाँधी ||
हिति चित्त की द्वै थूँनी गिराँनी, मोह बलिण्डा तूटा |
त्रिस्नाँ छाँनि परि घर ऊपरि, कुबधि का भाँडाँ फूटा ||
जोग जुगति करि संतौं बाँधी, निरचू चुवै न पाँणी |
कूड़ कपट काया का निकस्या, हरि की गति जब जाँणी ||
आँधी पीछै जो जल बूठा , प्रेम हरि जन भींनाँ |
कहै कबीर भाँन के प्रगटे, उदित भया तम खीनाँ ||

व्याख्या - उक्त पंक्तियाँ कवि कबीर के 'सबद' से उद्धृत हैं | कवि इन पंक्तियों के माध्यम से यह कहना चाहते हैं कि ज्ञान बिल्कुल आँधी की तरह है | जिस प्रकार तेज आँधी के चलने से कच्चे छप्पर के घरों को अत्यधिक नुकसान पहुँचता है, जिस बाँस और मोटी लकड़ी पर छप्पर टिका होता है, वह भी टूट जाता है | तब उस छप्पर की दुर्बलता का भेद खुल जाता है | ठीक उसी प्रकार, घर यदि मजबूत और पक्का हो तो उसे कोई भी आंधी प्रभावित नहीं कर सकती है | जब व्यक्ति ज्ञान प्राप्ति कर लेता है, तब उसके मन के सारे भ्रम मिट जाते हैं | ज्ञान की शक्ति के आगे मोह-माया का बंधन क्षण-भंगुर हो जाता है | व्यक्ति स्वार्थ रहित जीवन जीने लगता है | जैसे आंधी के बाद वर्षा से सारे सामान धुल जाते हैं, वैसे ही ज्ञान प्राप्ति के बाद मन निर्मल हो जाता है | मनुष्य ईश्वर भक्ति में लीन हो जाता है |

egyanarchive

प्रश्न अभ्यास.

साखियाँ

1. 'मानसरोवर' से कवि का क्या अभिप्राय है?

उत्तर- मानसरोवर से कवि का अभिप्राय हृदय रूपी तालाब से है, जो हमारे मन में स्थित है।

2. कवि ने सच्चे प्रेमी की क्या कसौटी बताई है ?

उत्तर- कवि के अनुसार सच्चे प्रेमी की कसौटी यह है की उससे मिलने पर मन की सारी मलिनता नष्ट हो जाती है। पाप धुल जाते हैं और सद्भावनाएँ जाग्रत हो जाती है।

3. तीसरे दोहे में कवि ने किस प्रकार के ज्ञान को महत्व दिया है ?

उत्तर- तीसरे दोहे में कवि ने अनुभव से प्राप्त ज्ञान को महत्व दिया है।

4. इस संसार में सच्चा संत कौन कहलाता है ?

उत्तर- इस संसार में सच्चा संत वह है जो साम्प्रदायिक भेद-भाव, तर्क-वितर्क और वैर-विरोध के झगड़े में न पड़कर निश्छल भाव से प्रभु की भक्ति में लीन रहता है।

5. अंतिम दो दोहों के माध्यम से कबीर ने किस तरह की संकीर्णता की ओर संकेत किया है ?

उत्तर- अंतिम दो दोहों के माध्यम से कबीर ने निम्नलिखित संकीर्णताओं की ओर संकेत किया है:

क. अपने-अपने मत को श्रेष्ठ मानने की संकीर्णता और दूसरे के धर्म की निंदा करने की संकीर्णता।

ख. ऊंचे कुल के अहंकार में जीने की संकीर्णता।

6. किसी भी व्यक्ति की पहचान उसके कुल से होती है या उसके कर्मों से? तर्क सहित उत्तर दीजिये।

उत्तर- किसी भी व्यक्ति की पहचान उसके कर्मों से होती है। आज तक हजारों राजा पैदा हुए और मर गए। परन्तु लोग जिन्हें जानते हैं, वे हैं - राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर आदि। इन्हें इसलिए जाना गया क्योंकि ये केवल कुल से ऊँचे नहीं थे, बल्कि इन्होंने ऊँचे कर्म किए। इनके विपरीत कबीर, सूर, तुलसी बहुत सामान्य घरों से थे। इन्हें बचपन में ठोकरें भी कहानी पड़ीं। परन्तु फ़िर भी वे अपने श्रेष्ठ कर्मों के आधार पर संसार-भर में प्रसिद्ध हो गए। इसलिए हम कह सकते हैं कि महत्व ऊँचे कर्मों का होता है, कुल का नहीं।

7. काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए -

हस्ती चढ़िये ज्ञान कौ, सहज दुलीचा डारि।
स्वान रूप संसार है, भूँकन दे झख मारि।

उत्तर-

प्रस्तुत दोहे में कबीरदास जी ने ज्ञान को हाथी की उपमा तथा लोगों की प्रतिक्रिया को स्वान (कुत्ते) का भौंकना कहा है। यहाँ रुपक अलंकार का प्रयोग किया गया है। ‘दोहा’ छंद का प्रयोग किया गया है। यहाँ ‘सधुक्कड़ी’ भाषा का प्रयोग किया गया है। यहाँ शास्त्रीय ज्ञान का विरोध किया गया है तथा सहज ज्ञान को महत्व दिया गया है।

सबद

8. मनुष्य ईश्वर को कहाँ-कहाँ ढूँढता फिरता है ?

उत्तर- मनुष्य ईश्वर को देवालय (मंदिर), मस्जिद, काबा तथा कैलाश में ढूँढता फिरता है।

egyanarchive

9. कबीर ने ईश्वर प्राप्ति के लिए किन प्रचलित विश्वासों का खंडन किया है ?

उत्तर- कबीर ने ईश्वर-प्राप्ति के प्रचलित विश्वासों का खंडन किया है। उनके अनुसार ईश्वर न मंदिर में है, न मस्जिद में; न काबा में हैं, न कैलाश आदि तीर्थ यात्रा में; वह न कर्म करने में मिलता है, न योग साधना से, न वैरागी बनने से। ये सब उपरी दिखावे हैं, ढोंग हैं। इनमें मन लगाना व्यर्थ है।

10. कबीर ने ईश्वर को सब स्वाँसों की स्वाँस में क्यों कहा है?

उत्तर- 'सब स्वाँसों की स्वाँस में' से कवि का तात्पर्य यह है कि ईश्वर कण-कण में व्याप्त हैं, सभी मनुष्यों के अंदर हैं। जब तक मनुष्य की साँस (जीवन) है तब तक ईश्वर उनकी आत्मा में हैं।

11. कबीर ने ज्ञान के आगमन की तुलना सामान्य हवा से न कर आँधी से क्यों की ?

उत्तर- कबीर ने ज्ञान के आगमन की तुलना सामान्य हवा से न कर आँधी से की है क्योंकि सामान्य हवा में स्थिति परिवर्तन की क्षमता नहीं होती है। परन्तु हवा तीव्र गति से आँधी के रुप में जब चलती है तो स्थिति बदल जाती है। आँधी में वो क्षमता होती है कि वो सब कुछ उड़ा सके। ज्ञान में भी प्रबल शक्ति होती है जिससे वह मनुष्य के अंदर व्याप्त अज्ञानता के अंधकार को दूर कर देती है।

12. ज्ञान की आँधी का भक्त के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

उत्तर- ज्ञान की आँधी का मनुष्य के जीवन पर यह प्रभाव पड़ता है कि उसके सारी शंकाएँ और अज्ञानता का नाश हो जाता है। वह मोह के सांसारिक बंधनों से मुक्त हो जाता है। मन पवित्र तथा निश्छल होकर प्रभु भक्ति में तल्लीन हो जाता है।

13. भाव स्पष्ट कीजिए -

(क) हिति चित्त की द्वै थूँनी गिराँनी, मोह बलिंडा तूटा।

(ख) आँधी पीछै जो जल बूठा, प्रेम हरि जन भींनाँ।

उत्तर-

(क) यहाँ ज्ञान की आँधी के कारण मनुष्य के मन पड़े प्रभाव के फलस्वरूप मनुष्य के स्वार्थ रूपी दोनों खंभे टूट गए तथा मोह रूपी बल्ली भी गिर गई। इससे कामना रूपी छप्पर नीचे गिर गया। उसके मन की बुराइयाँ नष्ट हो गई और उसका मन साफ़ हो गया।

(ख) ज्ञान रूपी आंधी के पश्चात भक्ति रूपी जल की वर्षा हुई जिसके प्रेम में हरी के सब भक्त भीग गए। अर्थात् ज्ञान की प्राप्ति के बाद मन शुद्ध हो जाता है।

egyanarchive

रचना और अभिव्यक्ति

14. संकलित साखियों और पदों के आधार पर कबीर के धार्मिक और सांप्रदायिक सद्भाव सम्बन्धी विचारों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर-

कबीर ने अपने विचारों द्वारा जन मानस की आँखों पर धर्म तथा संप्रदाय के नाम पर पड़े परदे को खोलने का प्रयास किया है। उन्होंने हिंदु- मुस्लिम एकता का समर्थन किया तथा धार्मिक कुप्रथाओं जैसे मूर्तिपूजा का विरोध किया है। ईश्वर मंदिर, मस्जिद तथा गुरुद्वारे में नहीं होते हैं बल्कि मनुष्य की आत्मा में व्याप्त हैं। कबीर ने हर एक मनुष्य को किसी एक मत, संप्रदाय, धर्म आदि में न पड़ने की सलाह दी है। ये सारी चीजें मनुष्य को राह से भटकाने तथा बँटवारे की और ले जाती है अतः कबीर के अनुसार हमें इन सब चक्करों में नहीं पड़ना चाहिए। मनुष्य को चाहिए की वह निष्काम तथा निश्छल भाव से प्रभु की आराधना करें।

भाषा अध्ययन

15. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए -

पखापखी, अनत, जोग, जुगति, बैराग, निरपख

उत्तर-

1. पखापखी – पक्ष-विपक्ष
2. अनत – अन्यत्र
3. जोग – योग
4. जुगति – युक्ति
5. बैराग – वैराग्य
6. निरपख – निष्पक्ष

egyanarchive